B.A. Semester IV. (Abnormal Psy). (1)

eNote :- 1st chapter :-

Q. :- असामान्य मनोविज्ञान की परिभाषा दें तथा इसके विषय वस्तु का वर्णन करें?

Answer :- असामान्य मनोविज्ञान अँग्रेजी शब्द Abnormal Psychology का हिन्दी रूपान्तर है। Abnormal शब्द की उत्पत्ति Anomelos से हुई है, जो दो शब्दों Ano और melos के मेल से बना है। Ano का अर्थ "नहीं" और Melos का अर्थ 'नियमित' होता है। इस अर्थ में अनियमित व्यवहारों का अध्ययन करनेवाला मनोविज्ञान असामान्य मनोविज्ञान है।

कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों ने Abnormal की व्याख्या कुछ दूसरे ढंग से की है। उनलोगों की राय में Abnormal, Ab और normal दो शब्दों के मेल से बना है। Ab का अर्थ away, इस अर्थ में Abnormal का अर्थ "Away from normal" अर्थात् सामान्य से दूर मानते हैं।

वास्तव में देखा जाय तो दोनों विचारों से असामान्य मनोविज्ञान की विषय वस्तु स्पष्ट नहीं होती है। मिला-जुलाकर रूप की दोनों धारणाएँ लगभग समान है। कई आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने असामान्य मनोविज्ञान को परिभाषित करने का प्रयास किया है। किस्कर (Kisker) ने परिभाषा देते हुए कहा है; " मानव के वे व्यवहार और अनुभूतियाँ जो साधारणतः अनोखी, असाधारण या पृथक् हैं; असामान्य समझी जाती है।" (Human behaviours and experiences which are strange, unusual or different ordinarily are considered abnormal.)

इसी क्रम में प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जेम्स ड्रेवर के अनुसार :- "असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें व्यवहार या मानसिक घटना की विषमता का अध्ययन किया जाता है।" [Abnormal Psychology is that branch of Psychology which investigates such divergences of mental phenomena or of behaviour).

कोलमैन (Coleman) की परिभाषा से असामान्य मनोविज्ञान का स्वरूप बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। इन्होंने कहा है कि असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान का वह क्षेत्र है, जिसमें विशेष रूप से मनोविज्ञान के नियमों के समन्वय और विकास का अध्ययन असामान्य व्यवहार को समझने के लिए किया जाता है। (Abnormal Psychology is the field of Psychology which specializes in the development and integration of Psychological principales for the understanding of abnormal behaviour.].

(5) असामान्य व्यवहारों के कारणों का अध्ययन :— असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति के असामान्य व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है; अतः यह ज्ञात करना आवश्यक है कि व्यक्ति के असामान्य व्यवहारों के क्या कारण है। बिना कारण जाने असामान्य व्यवहारों को दूर नहीं किया जा सकता है; इसलिए असामान्य मनोविज्ञान का क्षेत्र, असामान्यता के कारणों का अध्ययन करना भी है।

(6) मनोलैंगिक विकास का अध्ययन :— मनोलैंगिक विकास के तथ्य को सर्वप्रथम फ्रायड ने बतलाया है। उन्होंने कहा कि व्यक्तित्व के निर्माण में मनोलैंगिक विकास की प्रमुख भूमिका होती है। इस तथ्य को अधिकांश मनोवैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है। अतः स्पष्ट है कि व्यक्ति के असामान्य व्यवहारों के पीछे मनोलैंगिक विकास की अहम् भूमिका होती है। इसे ध्यान में रखते हुए असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत मनोलैंगिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।

(7) मानसिक दुर्बलता :— जो व्यक्ति मानसिक रूप से दुर्बल होते हैं; उनका व्यवहार भी असामान्य हो जाता है। अतः मानसिक दुर्बलता के कारण, लक्षण एवं निदान का अध्ययन भी असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत ही होता है।

(8) :— यौन विकृतियों का अध्ययन :→ कुछ व्यक्तियों में यौन विकृतियाँ देखी जाती है अर्थात् वे गलत ढंग से यौन इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। ऐसे व्यक्तियों के व्यवहारों को भी असामान्य कहा जाता है। जैसे :— हस्तमैथुन, गुदा मैथुन, पशुमैथुन आदि। व्यक्ति की इन असामान्य व्यवहारों का अध्ययन करना भी असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

(9) मनोचिकित्सा का अध्ययन :— असामान्य मनोविज्ञान एक व्यावहारिक विज्ञान है। अतः इसमें विभिन्न मानसिक बीमारियों के कारणों का अध्ययन करने के पश्चात् उसकी चिकित्सा का उपाय करना भी है; अतः इसके अन्तर्गत कई मनोचिकित्सा प्रविधियों का अध्ययन किया जाता है। जैसे :— समूह चिकित्सा, व्यवहार चिकित्सा, सम्मोहन आदि।

(10) अपराध एवं बाल अपराध का अध्ययन :— इस मनोविज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति के अपराध एवं बाल अपराध का अध्ययन भी किया जाता है। व्यक्ति के जैसे व्यवहार जो समाज विरोधी होते हैं, उन व्यवहारों का अध्ययन एवं उसे दूर करने के उपाय का अध्ययन भी असामान्य मनोविज्ञान ही करता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं पर गौर किया जाय, तो निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं :—

(1) असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है।

(2) असामान्य मनोविज्ञान में व्यक्ति के असामान्य व्यवहारों को समझने का प्रयास किया जाता है।

(3) व्यक्ति के असामान्य अवस्था को समझने के लिए मनोवैज्ञानिक नियमों एवं सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।

(4) व्यक्ति के असामान्य अवस्था के लक्षणों को दूर करने के लिए मनोवैज्ञानिक चिकित्सा-विधियों का सहारा लिया जाता है।

असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र :— असामान्य मनोविज्ञान की परिभाषा में कहा गया है कि इसमें व्यक्ति की असामान्य अनुभूतियों और व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है, लेकिन इतना कह देने से इसका क्षेत्र स्पष्ट नहीं होता। असामान्य मनोविज्ञान में असामान्यता से सम्बन्धित जिन विषयों का अध्ययन किया जाता है, उनका विवरण निम्न है :—

(1) असामान्य अनुभूति और व्यवहार का अध्ययन :— व्यक्ति के असामान्य व्यवहारों को समझने के लिए असामान्य मनोविज्ञान का सहारा लिया जाता है। जो व्यक्ति असामान्य होगा उसका व्यवहार भी अवश्यक रूप से असामान्य होगा, अतः ऐसे व्यक्ति के लक्षण, कारण तथा उपचार का अध्ययन मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है।

(2) अचेतन का अध्ययन :→ आधुनिक मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों के माध्यम से यह बात साबित हो चुका है कि व्यक्ति के समस्त असामान्य व्यवहारों को उसका अचेतन गम्भीर रूप से प्रभावित करता है। बहुत से असामान्य व्यवहारों के कारणों को जात करने तथा उसका उपचार करने के लिए अचेतन का विश्लेषण करना आवश्यक होता है, इसलिए असामान्य मनोविज्ञान में अचेतन के अध्ययन अति आवश्यक है। फ्रायड (Freud) ने असामान्य व्यवहारो को समझने के लिए अचेतन के अध्ययन पर बहुत अधिक बल दिया है।

(3) मानसिक विकृतियों का अध्ययन :→ असामान्य मनोविज्ञान में मानसिक विकृतियों का अध्ययन किया जाता है; क्योंकि असामान्य व्यवहारों का मूल कारण मानसिक विकृतियाँ हैं। मानसिक विकृतियों को उसकी जटिलता के आधार पर दो भागों में बाँटा गया है। — मनः स्नायु विकृति (Psychoneurosis) तथा मनोविकृति (Psychosis). इन विकृतियों के कारण, लक्षण एवं इन्हे दूर करने के उपायों का अध्ययन करना असामान्य मनोविज्ञान का क्षेत्र है।

(4) स्वप्न का अध्ययन :— स्वप्न सभी व्यक्ति देखते हैं, लेकिन उसका अर्थ नहीं समझते। वास्तव में, स्वप्न अचेतन इच्छाओं की अभिव्यक्ति है। इसके माध्यम से अचेतन को जाना जा सकता है। जो सभी असामान्य व्यवहारों का मूल है। इसके अन्तर्गत सभी प्रकार के स्वप्नों की व्याख्या एवं स्वप्न सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।